

## 56 मिलियन वर्ष पहले हुई थी एक चरम ग्लोबल वार्मिंग घटना

### चर्चा में क्यों ?

यू.के. के साउथैम्पटन विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं ने नए भू-रासायनिक मापों और नव वैश्विक जलवायु मॉडलिंग के संयोजन का उपयोग करते हुए दिखाया कि आज से 56 मिलियन वर्ष पहले ज्वालामुखी के वसिफोट से बड़े पैमाने पर कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन से एक चरम ग्लोबल वार्मिंग की घटना हुई थी। यह घटना लगभग 150 हजार साल तक चली थी, जिसके फलस्वरूप वैश्विक तापमान में कम-से-कम पाँच डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई थी।

### प्रमुख बढि

- यू.के. के शोधकर्त्ताओं के अनुसार पैलियोसीन-ईयोसनि थर्मल मैक्सिमम (Palaeocene-Eocene Thermal Maximum) घटना महासागर और वायुमंडल में कार्बन उत्सर्जन के कारण हुई थी।
- यह घटना उस समय की है जब ग्रीनलैंड उत्तर-पश्चिम यूरोप से अलग हो रहा था और जिसके कारण उत्तरी अटलांटिक महासागर का निर्माण हुआ था।
- उस घटना के दौरान 10,000 पेटाग्राम से अधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित हुई थी, जो अब तक जलाए गए कुल जीवाश्म ईंधनों से 30 गुना अधिक तथा मौजूदा सभी परंपरागत और अपरंपरागत जीवाश्म ईंधन भंडारों के बराबर है।

### पैलियोसीन-ईयोसनि थर्मल मैक्सिमम क्या है?

- पैलियोसीन-ईयोसनि थर्मल मैक्सिमम पछिले 66 मिलियन वर्षों की सबसे तीव्र और चरम प्राकृतिक ग्लोबल वार्मिंग घटना है। यह घटना लगभग 150 हजार साल तक चली थी, जिसके फलस्वरूप वैश्विक तापमान में वृद्धि हुई थी।
- इस घटना में 25 हजार वर्ष से भी कम समय में वायुमंडल में ज्वालामुखी उदगार के कारण कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा दुगुनी हो गई थी।